Link to T/C

Powerfully Purposed Transformation

Joe T. Green

Accepting God’s Identity for You is Everything---Following Jesus into God’s Kingdom---and surrendering to His Lordship Today---This is God's formula for changing mankind, revealing His will for your life, and winning the war for your soul.

> *Romans 12:2 KJV*
> *(2) And be not conformed to this world: but be ye transformed by the renewing of your mind, that ye may prove what is that good, and acceptable, and perfect, will of God.*

Copyright © 2021

All Rights Reserved. This book may not be copied or reprinted for commercial gain or profit. SKJV-King James Version of the Bible from; Published 1769; public domain

AMPC-Amplified Bible (classic); Copyright © 1954, 1958, 1962, 1964, 1965, 1987, by The Lockman Foundation.

English to Hindi has been translated by Copilot and DeeL Mistakes can be made. Check the English for author's exact meaning.

Hindi Scripture quotations are from the Word Project public-domain Hindi Bible text. Used for reference from their parallel Bible.

Pixabay License

Free for commercial use

No attribution required

Lion Lamb

Alexandra Stockmar Efrakmstocher

Divider Flourish Image by Gordon Johnson from Pixabay

Link to T/C

English Prologue

This is not a new teaching, or even a teaching, although everyone learns as they travel. I am attempting to show the pathway God laid out for human beings in the Garden of Eden and the path Jesus took so we could follow Him back into God’s presence as citizens in His Kingdom. If you are tired of boring lectures without power, life, or destiny?

The Kingdom of God is here. The kingdom is still full of joy, peace,

and excitement in today’s world.

It is not God's future plan, but rather today’s agenda. Therefore, the Lord is accepting volunteers to join the kingdom’s goal of establishing the mindset of His kingdom in the hearts of believers today.

If you identify as a Christian, live with the hope of attaining Heaven, and believe you will be raptured out of the current cultural war, you have become a victim of the devil’s schemes and a party to their success. He always wants you to delay accepting the things of God until it is too late for them to affect the world we live in today. Discover what Satan is stealing from you today.

Because Jesus has finished all things needed for life and Godliness, our family, city, state, country, and world’s future depends upon our recognizing, believing, claiming, and living in all of the things of God today, not tomorrow.

God has established our identity

as His child at the cross.

A willing and obedient heart is all it takes to live, move, and have your being, identity, and destiny in God. Therefore, passionately strive to establish a true legacy for your children. Without any exaggeration, I can say, enter at the risk of being forever changed!

Link to T/C

Hindi Prologue

यह कोई नई शिक्षा नहीं है, और न ही वास्तव में कोई शिक्षा है, हालाँकि हर व्यक्ति यात्रा करते समय कुछ न कुछ सीखता ही है। मैं केवल वह मार्ग दिखाने का प्रयास कर रहा हूँ जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा के लिए अदन की वाटिका में रखा था, और वह मार्ग जिस पर यीशु चले ताकि हम उनका अनुसरण करते हुए फिर से परमेश्वर की उपस्थिति में, उनके राज्य के नागरिक बनकर प्रवेश कर सकें। यदि आप शक्तिहीन, नीरस, और उद्देश्यहीन उपदेशों से थक चुके हैं—

परमेश्वर का राज्य यहाँ है।

आज की दुनिया में भी यह राज्य आनंद, शांति, और उत्साह से भरा हुआ है। यह परमेश्वर की भविष्य की योजना नहीं है, बल्कि आज का कार्य है। इसलिए प्रभु आज ऐसे स्वयंसेवकों को बुला रहे हैं जो विश्वासियों के हृदयों में उनके राज्य की मानसिकता स्थापित करने के लक्ष्य में शामिल होना चाहते हैं।

यदि आप स्वयं को मसीही मानते हैं, स्वर्ग प्राप्त करने की आशा में जीते हैं, और मानते हैं कि आप वर्तमान सांस्कृतिक युद्ध से रैप्चर होकर बाहर ले जाए जाएँगे, तो आप शैतान की चालों के शिकार बन चुके हैं और उसकी योजनाओं की सफलता में सहभागी हो रहे हैं। वह हमेशा चाहता है कि आप परमेश्वर की बातों को स्वीकार करने में देर करें—इतनी देर कि वे आज की दुनिया पर प्रभाव न डाल सकें। जानिए कि शैतान आज आपसे क्या छीन रहा है।

क्योंकि यीशु ने जीवन और भक्ति के लिए आवश्यक सब कुछ पूरा कर दिया है, इसलिए हमारे परिवार, शहर, राज्य, देश और दुनिया का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम आज—कल नहीं—परमेश्वर की बातों को पहचानें, विश्वास करें, दावा करें, और उनमें जीवन जिएँ।

परमेश्वर ने क्रूस पर हमारी पहचान अपने बच्चों के रूप में स्थापित कर दी है।

एक इच्छुक और आज्ञाकारी हृदय ही पर्याप्त है ताकि आप परमेश्वर में अपना जीवन, गति, अस्तित्व, पहचान और नियति पा सकें। इसलिए अपने बच्चों के लिए एक सच्ची विरासत स्थापित करने के लिए पूरे मन से प्रयास करें। बिना किसी अतिशयोक्ति के मैं कह सकता हूँ— प्रवेश करें, इस जोखिम के साथ कि आप हमेशा के लिए बदल सकते हैं!

Link to T/C

Table of Contents

English Prologue....4
Hindi Prologue....6
Revolution is Within....10
English Section 55....10
Hindi Section 55....12

Link to T/C

Revolution is Within

English Section 55

Many books that one might read are entertainment, instruction, education, etc. But you might miss most of this book's great value if you scan it or read it lightly, as you would a story. Therefore, you must study this book until you have internalized it. By that, I mean you should meditate on each chapter until the concept presented is learned and put into practice in your life, shaping your self-identity.

When I teach love, ponder it until you fully identify with it. Then, repeating the main ideas of that subject aloud and allowing your subconscious mind to think about them overnight helps tremendously with learning, because so much effective learning takes place while we are asleep. Even though you are unaware of it, your subconscious mind continues working on the previous day's events, assimilating, solving, and filing the problems of the day before

When you arise and bring those thoughts to mind, it strengthens your recall and makes them more easily accessible. Doing this regularly, over a longer period, will transform your self-identity.

Several years ago, I started playing the keyboard; my goal was to be able to sing and worship God through my music. After about ten years of this, I played the church piano for some friends at church. Right after that event, I realized I was a piano player. I did not become a pianist because I was a professional player; I became a player because I practiced until I identified myself as a pianist.

Renewing our minds (Romans 12:2) through the concept of practice, practice, practice transforms us into His image. Do this, however it works for you. Reading and practicing by recalling the main points and speaking them aloud works well for me. Just as David encouraged himself in the Lord, I do likewise and repeat as often as necessary, usually daily, until I own them, and they are mine. It is not easy or quick, but it is the most beneficial thing you can do for yourself, your family, and the world you live in.

Link to T/C

Hindi Section 55

कई किताबें जो कोई पढ़ सकता है, वे मनोरंजन, निर्देश, शिक्षा आदि के लिए होती हैं। लेकिन यदि आप इस किताब को एक कहानी की तरह सरसरी तौर पर या हल्के में पढ़ते हैं, तो आप इसके अधिकांश महान मूल्य से चूक सकते हैं। इसलिए, आपको इस किताब का तब तक अध्ययन करना चाहिए जब तक कि आप इसे आत्मसात न कर लें। मेरे कहने का मतलब यह है कि आपको प्रत्येक अध्याय पर तब तक ध्यान लगाना चाहिए जब तक कि उसमें प्रस्तुत अवधारणा को सीखकर अपने जीवन में लागू न कर लें, जो आपकी आत्म-पहचान को आकार दे।

जब मैं प्रेम सिखाता हूँ, तो उस पर तब तक मनन करें जब तक कि आप उससे पूरी तरह एक न हो जाएँ। फिर, उस विषय के मुख्य विचारों को ज़ोर से दोहराना और अपने अवचेतन मन को रात भर उनके बारे में सोचने देना सीखने में बहुत मदद करता है, क्योंकि बहुत सारा प्रभावी अधिगम हमारे सोने के दौरान होता है। भले ही आप इसके प्रति सचेत न हों, आपका अवचेतन मन पिछले दिन की घटनाओं पर काम करना जारी रखता है, दिन भर की समस्याओं को आत्मसात करता है, हल करता है और उन्हें संचित करता है।

जब आप उठते हैं और उन विचारों को मन में लाते हैं, तो यह आपकी स्मरणशक्ति को मजबूत करता है और उन्हें अधिक आसानी से सुलभ बनाता है। लंबे समय तक नियमित रूप से ऐसा करने से आपकी आत्म-पहचान बदल जाएगी।

कुछ साल पहले, मैंने कीबोर्ड बजाना शुरू किया; मेरा लक्ष्य अपने संगीत के माध्यम से गाना और ईश्वर की आराधना करना था। लगभग दस साल तक ऐसा करने के बाद, मैंने चर्च में कुछ दोस्तों के लिए पियानो बजाया। उस घटना के ठीक बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं एक पियानो वादक हूँ। मैं पेशेवर वादक होने के कारण पियानोवादक नहीं बना; मैं एक वादक इसलिए बना क्योंकि मैंने तब तक अभ्यास किया जब तक कि मैंने खुद को एक पियानोवादक के रूप में पहचान नहीं लिया।

अभ्यास, अभ्यास, अभ्यास की अवधारणा के माध्यम से अपने मन को नवीनीकृत करना (रोमियों 12:2) हमें उसकी प्रतिमा में बदल देता है। इसे वैसे ही करें जैसा आपके लिए सही हो। मुख्य बिंदुओं को याद करके और उन्हें ज़ोर से बोलकर पढ़ना और अभ्यास करना मेरे लिए अच्छा काम करता है। जैसे दाऊद ने प्रभु में स्वयं को प्रोत्साहित किया, वैसे ही मैं भी करता हूँ और जब तक वे मेरे नहीं हो जाते, तब तक ज़रूरत पड़ने पर, आमतौर पर रोज़ाना, दोहराता रहता हूँ। यह आसान या तेज़ नहीं है, लेकिन यह आपके लिए, आपके परिवार के लिए, और जिस दुनिया में आप रहते हैं, उसके लिए सबसे फायदेमंद काम है जो आप कर सकते हैं।